mindplan.in®

BPSC Mains

Smart Book Notes

Mains GS 1 - हिंदी

- Syllabus Wise
- Topic Wise
- Toppers strategy QA pattern Notes
- Every Topic covered with **as many QA pattern Notes possible**

Sample

bpsc books **mindplan.in**

mindplan.in®

smart study + **sooper-quick** revision

A Trademarked and Registered company.

All topics in notes are as per the Official BPSC Mains Syllabus

bpsc books **mindplan.in**

Save trees. Save life.

sample

All topics in notes are as per the Official BPSC Mains Syllabus

bpsc books **mindplan.in**

PREFACE

Dear students,

I am delighted to present this book to Administrative Services students and am grateful for the tremendous efforts of the experts to make this book authentic, relevant and updated. My heartful of gratitude for the efforts of the technical team to make this book useful and easy.

In the end, I am open to the creative suggestions and ideas from all the hard-working students. If there is any scope of any kind of issue or mistake in this book or in its delivery, then I stand with the students.

Wishing all the students a bright future!

Publisher
Mindplan.in
support@mindplan.in

Sample

All topics in notes are as per the Official BPSC Mains Syllabus

bpsc books mindplan.in

Topic: मौर्य काल की कला

Below is a screenshot of GS1 syllabus from the **Official BPSC Mains syllabus**

पत्र– 1 में आधुनिक भारत (तथा बिहार के विशेष सन्दर्भ में) के इतिहास और भारतीय संस्कृति के अन्तर्गत लगभग उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य भाग से लेकर देश के इतिहास की रूप रेखा के साथ–साथ गाँधी, रवीन्द्र और नेहरू से संबंधित प्रश्न भी सम्मिलित होंगे। बिहार के आधुनिक इतिहास के संदर्भ में प्रश्न इस क्षेत्र में पाश्चात्य शिक्षा (प्रौद्योगिकी शिक्षा समेत) के आरम्भ और विकास से पूछे जाएंगे। इसमें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बिहार की भूमिका से संबंधित प्रश्न रहेंगे। ये प्रश्न मुख्यतः संथाल विद्रोह, बिहार में 1857 विरसा का आन्दोलन, चम्पारण सत्याग्रह तथा 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन से पूछे जाएँगे। परीक्षार्थियों से आशा की जाती है कि वे मौर्य काल तथा पाल काल की कला और पटना कलम चित्रकला की मुख्य विशेषताओं से परिचित होंगे। सांख्यिकीय विश्लेषण आरेखन और

All topics in notes are as per the Official BPSC Mains Syllabus only.

All topics in notes are as per the Official BPSC Mains Syllabus

bpsc books mindplan.in

i. मौर्यकालीन कला की विशेषताओं को बताएँ|

Note:

This is for sample purposes only. More details are available in Mindplan.in BPSC Mains Notes on this topic.

कला किसी काल के मानवी कल्पनामों के मूर्त रूप को प्रदर्शित करता है| भारतीय इतिहास में कला परंपरा का विकास सिंधु घाटी सभ्यता से ही प्रारंभ हूआ| लेकिन स्थायी एवं निरंतर कला परंपरा का विकास मौर्य काल से ही माना जाता है, क्योंकि मौर्य काल से पूर्व लकडी एवं मिट्टी के कला रूपों का विकास हुआ ,जिसमें निरंतरता का अभाव रहा|

मौर्य कला शैली का वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है:-

मौर्य काल की मूर्ति

मौर्य मूर्तिकला में दरबार और लोक कला दोनों शामिल हैं| मौर्यकालीन मूर्तियां पत्थर, धातु और मिट्टी से बनी हैं| अखंड खंभों पर खुदे हुए या स्वतंत्र रूप से बने पत्थरों को काटकर और स्वतंत्र रूप से बनाई गई मूर्तियों को काटकर पाषाण की मूर्तियां तीन रूपों में पाई जाती हैं|

bpsc books **mindplan.in**

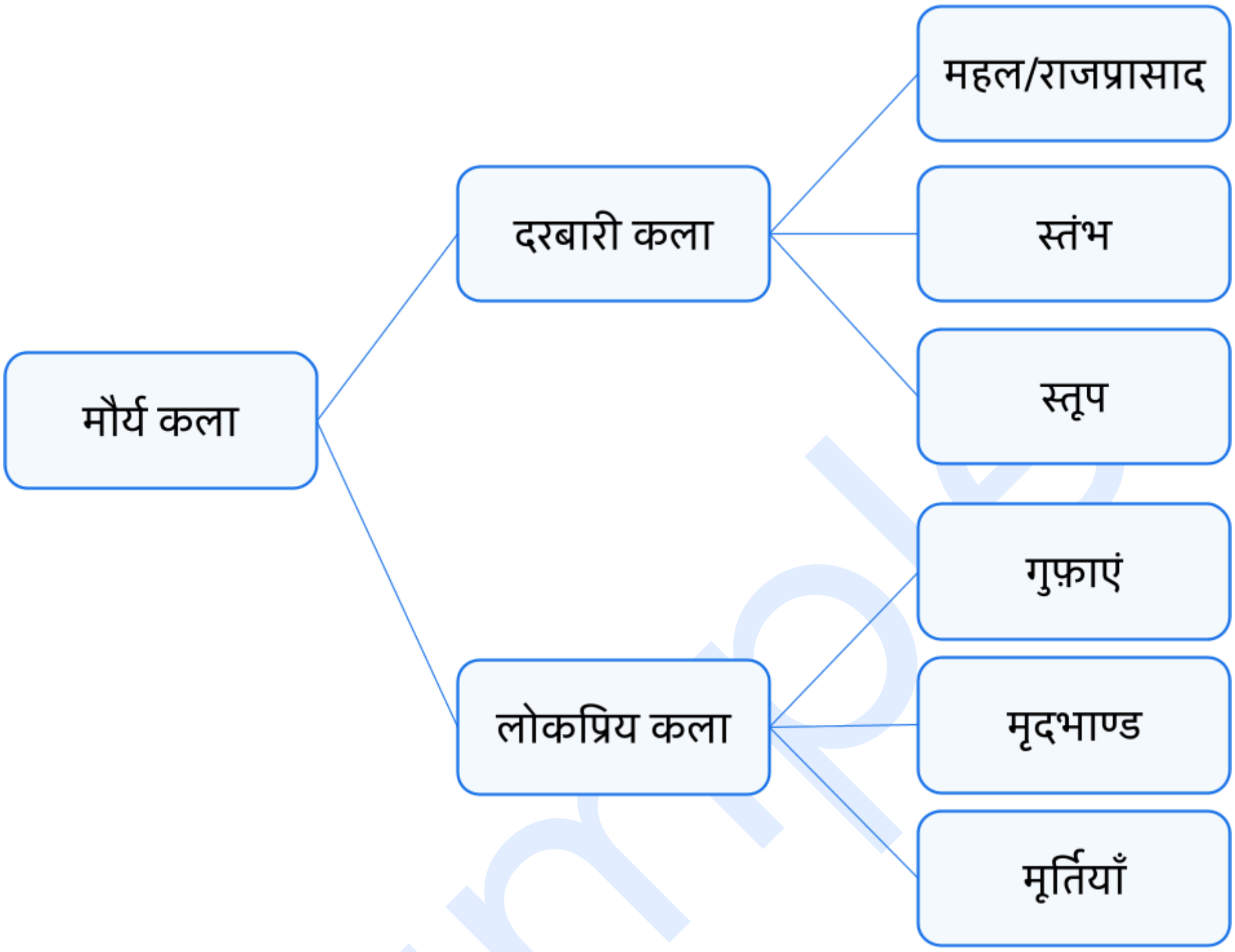

मौर्य कला शैली जहां **स्थानीय ,भारतीय परंपरा शैली** एवं **विदेशी ईरानी शैली** को सम्मिश्रित रूप से प्रदर्शित करते है, परंतु इस पर कहाँ तक ईरानी प्रभाव है यह एक विमर्श का विषय है।

कला समीक्षकों के अनुसार मौर्य काल में समृद्ध राजनीतिक स्थिति में कला के विविध रूपों का विकास हुआ। राजकीय संरक्षण में जहाँ स्थापत्य कला को प्रधानता दी गई वही स्थानीय लोककला में 'मूर्तिकला' का अभूतपूर्व विकास हुआ।

bpsc books mindplan.in

रॉक-कट स्तंभ

मौर्य स्तंभ दुनिया के अन्य हिस्सों के स्तंभों से भिन्न हैं [जैसे अचमेनियन स्तंभ] क्योंकि वे रॉक-कट स्तंभ हैं जो इस प्रकार नक्काशी के कौशल को प्रदर्शित करते हैं। पूरे मौर्य साम्राज्य में पत्थर के खंभे खडे किए गए थे।

स्तंभ के सबसे ऊपरी तत्व को राजधानी के रूप में जाना जाता है।स्तंभ के शीर्ष भाग को बैल, शेर, हाथी आदि की आकृति से उकेरा गया था।सभी बडे आंकडे [आमतौर पर जानवर] एक वर्ग या गोलाकार अबेकस पर खडे जोरदार और नक्काशीदार होते हैं।

अबेकस को कमल से सजाया गया है।

प्रमुख पाषाण स्तंभ निम्नलिखित है जहाँ पशु की आकृति वाली मूर्तियाँ मिली है।

सिंह - लौरिया नंदन गढ़ सारनाथ

हाथी - सकिशा

बैल- लौरिया अरेराज , रामपुखा

धौली में रॉक कट [पत्थर] हाथी की मूर्तियां

यह मूर्ति पत्थर की मूर्तिकला की उत्कृष्टता को दर्शाती है। हाथी प्राकृतिक और पत्थर से बाहर आने के लिए तैयार दिखाई देता है।

कलसी [देहरादून] पत्थर पर हाथी की एक छवि उकेरी गई है

मिट्टी से बनी मूर्तियां लोक कला में मुख्य रूप से पाई जाती हैं। लोक कला का विकास

bpsc books mindplan.in

स्वतंत्र कारीगरों द्वारा बिना किसी शाही संरक्षण के किया गया था।

मौर्य काल की प्रसिद्ध मूर्तियों में यक्ष-यक्षिणी शामिल हैं

- यक्षिणी के दाहिने हाथ में चौरी [एलीविस्क] है।
- पत्थर से बनी यक्ष-यक्षिणी की विशाल मूर्ति
- खडी मूर्ति
- वे 3 धर्म [जैन धर्म, बौद्ध धर्म और हिंदू धर्म] से संबंधित पूजा की वस्तु हैं

कई जगह मिले है जैसे :

- मथुरा जिले के परखम गांव में मिली यक्ष की मूर्ति को मणिभद्र भी कहा जाता है।
- मथुरा जिले के बडौदा गांव से मिली यक्ष की तस्वीर
- मथुरा से मिली यक्ष की मूर्ति
- दीदारगंज [पटना] यक्षिणी की मूर्ति जो पटना संग्रहालय में प्रदर्शित है
- [विदिशा] बेसनगर से यक्षी की मूर्ति मिली।
- राजघाट [वाराणसी] से त्रिमुख यक्ष की मूर्ति मिली
- शिशुपाल गढ़ [ओडिशा] से यक्ष के चित्र मिले
- आर्मिन [कुरुक्षेत्र] से मिली यक्ष की मूर्ति
- महरौली से मिली यक्षिणी की तस्वीरें
- लोहानीपुर [पटना] से मिली नर की दो नग्न तस्वीरें

bpsc books mindplan.in

स्वतंत्र रूप से विकसित मूर्तिकला - केंद्रीय संरक्षण के अतिरिक्त मौर्यकाल में स्थानीय स्तर पर भी मूर्तिकला का अभूतपूर्व विकास हुआ। स्थानीय स्तर पर निर्मित यक्ष- यक्षिणीयों की मूर्ति लोक प्रतीकों का सूचक थी जो आगे चलकर देवी-देवताओं के रूप में विकसित हुई। कलात्मक रूप से निर्मित ये मूर्तियाँ अपने आप में जीवंत प्रतीत होती है। इनपर की गई चमकदार पॉलीश इन्हे और सूंदरता प्रदान करते हैं।

मूर्तियों का मुख्य रूप से उपयोग स्तूप की सजावट , तोरण और मेघी में और धार्मिक अभिव्यक्ति के रूप में किया जाता था।

यक्ष - यक्षिणी की मूर्तियाँ तीनों धर्मों, हिन्दू,बौद्ध एवं जैन में पूजनीय थी। यक्षिणी का सबसे पुराना उल्लेख तमिल रचना **शिल्पा - दिकारम** में मिलता है। सभी जैन तीर्थकरों का संबंध यक्षिणी से था।

इस प्रकार मौर्यकालीन मूर्तियों ने न केवल भारत में कला और संस्कृति को पुनर्जीवित किया बल्कि आने वाले दिनों में इसके फलने-फूलने के लिए एक ठोस नींव भी रखी।

स्तंभ

सारनाथ स्तंभ:

स्तंभ वाराणसी के पास सारनाथ, यह मौर्य काल से मूर्तिकला के बेहतरीन उदाहरणों में से एक है और अशोक द्वारा **'धर्मचक्रप्रवर्तन'** या बुद्ध के पहले उपदेश की स्मृति में बनाया गया था।

bpsc books **mindplan.in**

मूल रूप से इसमें पांच घटक होते हैं।

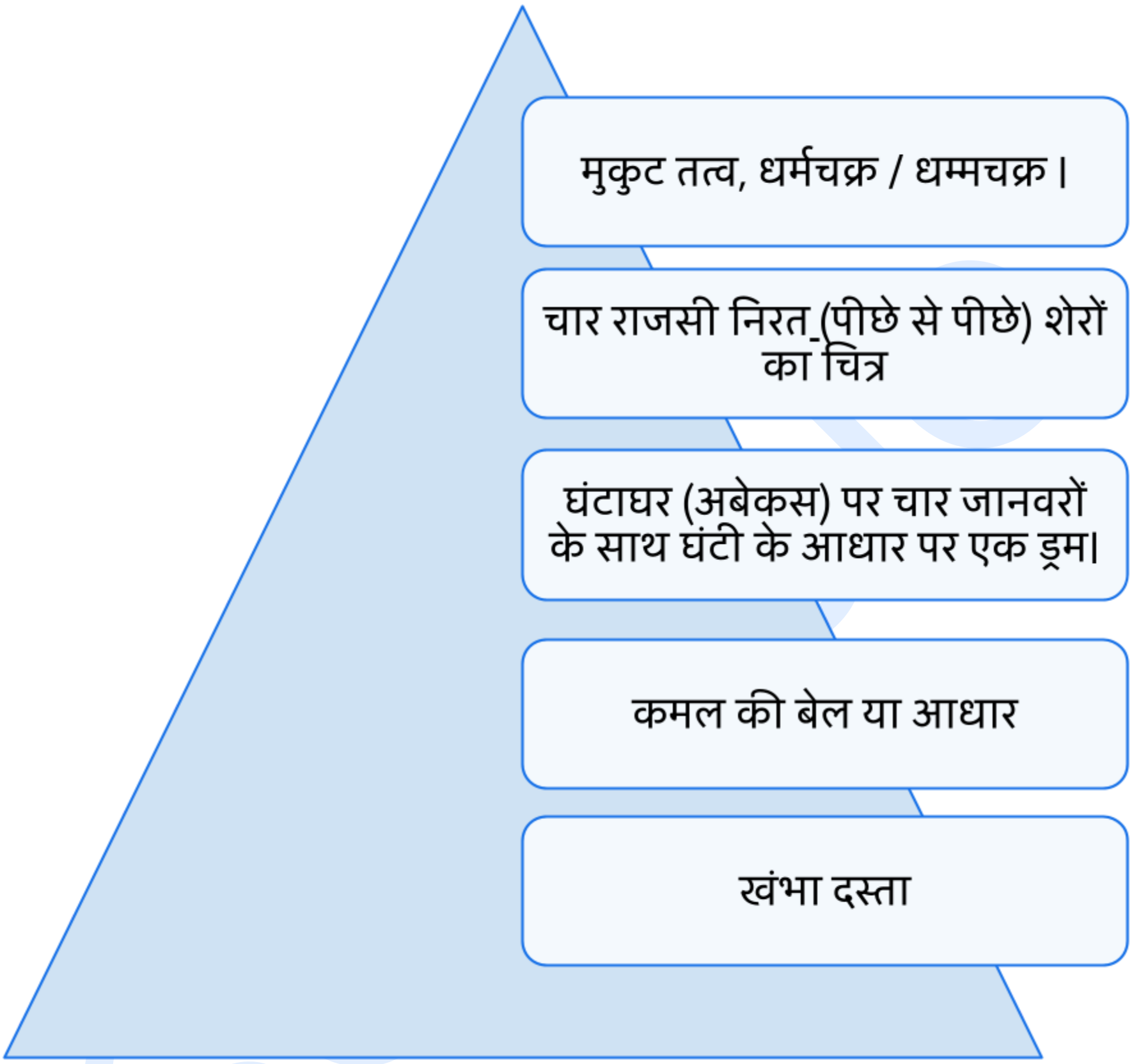

1. स्तंभ शाफ्ट

2. कमल की घंटी या आधार

3. घंटी के आधार पर एक ड्रम जिसमें चार जानवर दक्षिणावर्त चलते हैं [अबेकस]

4. चार राजसी संबोधित सिंहों की आकृति।

bpsc books mindplan.in

5. मुकुट तत्व/'धर्मचक्र'।

- **धर्मचक्र (ऊपर पांचवां घटक कहा गया है),** एक बडा पहिया भी इस स्तंभ का एक हिस्सा था। हालाँकि, यह पहिया टूटी हुई हालत में पडा हुआ है और सारनाथ के स्थल संग्रहालय में प्रदर्शित है।
- राजधानी में **चार एशियाई शेर** हैं जो पीछे की ओर बैठे हैं और उनकी चेहरे की मांसलता बहुत मजबूत है।
- वे **शक्ति, साहस, गर्व और आत्मविश्वास** का प्रतीक हैं।
- मूर्तिकला की सतह भारी **पॉलिश** है, जो मौर्य काल की विशेषता है।
- **अबेकस (बेल आधार पर ड्रम)** में चारों दिशाओं में एक चक्र (पहिया) का चित्रण है और प्रत्येक चक्र के बीच एक बैल, एक घोडा, एक हाथी और एक शेर है।

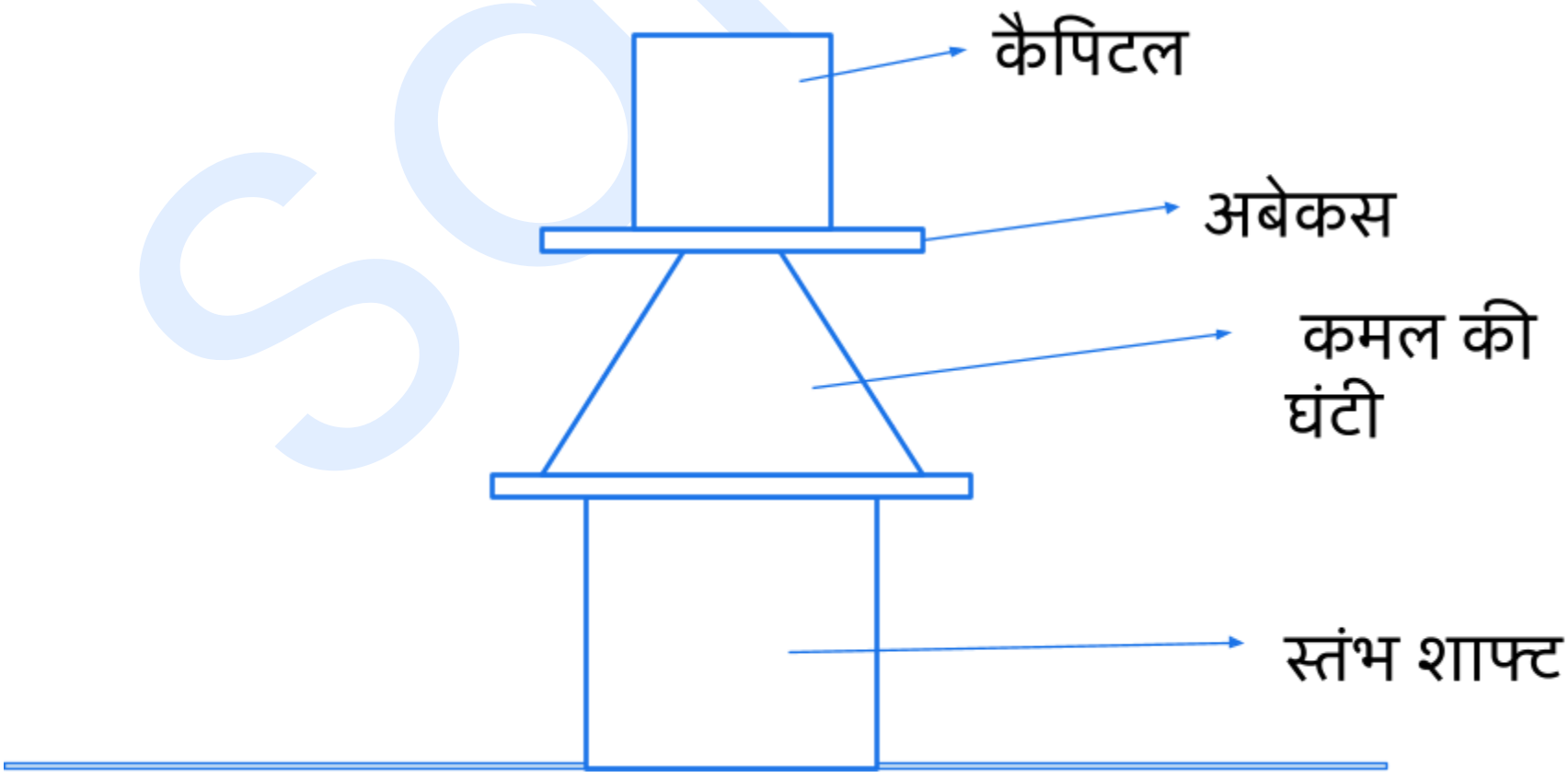

bpsc books mindplan.in

- प्रत्येक चक्र में **24 स्पोक्स** होते हैं।
- यह **24 स्पोक्स** चक्र भारत के राष्ट्रीय ध्वज में अपनाया गया है।
- वृत्ताकार अबेकस एक उल्टे **कमल की पूंजी** द्वारा समर्थित है।
- माधव सवाई द्वारा अपनाए गए प्रतीक में , केवल तीन शेर दिखाई देते हैं, चौथा दृश्य से छिपा हुआ है। अबेकस को इस तरह से सेट किया जाता है कि बीच में केवल एक चक्र को देखा जा सकता है, जिसमें दाईं ओर बैल और बाईं ओर घोड़ा होता है।
- सांची में एक अशोक के लॉयन कैपिटल की मूर्ति मिली है , लेकिन यह जर्जर हालत में है।
- वैशाली में पाया गया एक स्तंभ उत्तर की ओर है, जो बुद्ध की अंतिम यात्रा की दिशा है।

धर्मचक्र, एक बड़ा पहिया - बुद्ध का पहला उपदेश।

राजधानी में चार एशियाई शेर एक के बाद एक बैठे हैं और उनके चेहरे की मांसलता बहुत मजबूत है। वे शक्ति, साहस, गर्व और आत्मविश्वास का प्रतीक हैं। मूर्तिकला की सतह को भारी पॉलिश किया गया है।

चार सिंह - बुद्ध का क्षत्रियत्व और चार सिंह सभी दिशाओं में फैले उनके संदेशों का प्रतिनिधित्व करते हैं।

अबेकस [घंटी के आधार पर खींचा गया] में चारों दिशाओं में एक चक्र [पहिया] का

bpsc books mindplan.in

चित्रण है और प्रत्येक चक्र के बीच एक बैल, एक घोङा, एक हाथी और एक शेर है।

घोङा- महाभिनिष्क्रमण

बैल- बुद्ध का सूर्य चिन्ह [वृषभ]

हाथी - गर्भ धारण करने वाला बुद्ध

प्रत्येक चक्र में **24 तीलियाँ** होती हैं। इसे भारत के **राष्ट्रीय ध्वज** में अपनाया जाता है।

वृत्ताकार अबेकस एक उल्टे कमल की राजधानी द्वारा समर्थित है,

बिना शाफ्ट की राजधानी, कमल की घंटी और मुकुट चक्र को स्वतंत्र भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है।

मौर्यकालीन मूर्तिकला के प्रमुख साक्ष्य निम्नलिखित है

दीवारगंज (पटना)- यक्षिणी की मूर्ति,

वर्लदीवण ,(पटना) नारी एवं बालक की मूर्ति .

लोहानीपुर, (पटना) - जैन तीर्थकर की मूर्ति

परखम (मधुरा) - यक्ष की मूर्ति .

घोली (ओडिशा) - हाथी की भूर्ति, '

मृग मूर्तियाँ - हाथी, घोङा , हिरण, मनुष्य आदि की मूर्तिया

bpsc books mindplan.in

मौर्य कालीन मूर्तिकला की विशेषताएं

i. मौर्य काल में राजकीय स्थापत्य और मूर्तिकला के असाधारण विकास पर यूनानी और ईरानी सम्पर्क का प्रभाव था

ii. मौर्य मूर्ति निर्माण सामग्री के रूप में चट्टानों के उपयोग किया जाता था.

iii. मौर्य साम्राज्य के दौरान धार्मिक मूर्तिकला की अवधारणा भी प्रमुख थी। वास्तव धार्मिक मूर्तिकला में कट पत्थर का उपयोग पहली बार मौर्य युग में हुआ था।

iv. बौद्ध मंदिरों और गुफाओं में मौर्यकालीन मूर्तियों का वर्चस्व रहा है। गुफाएं स्पष्ट रूप से भारतीय वैदिक मूर्तिकला से प्रेरित हैं।

v. मौर्यकालीन मूर्तिकला की विशेषताएं शैव और वैष्णववाद से भी प्रभावित थीं।

मौर्यकालीन मूर्ति कला का उदाहरण

i. लुम्बिनी पार्क , सांची और सारनाथ जैसे स्थानों में खंभे मौजूद हैं जो मौर्यकालीन वास्तुकला का हिस्सा हैं। मौर्य काल के दौरान एक और शानदार मूर्तिकला सारनाथ स्तंभ है, जिसमें चार शेर हैं जो स्तंभ के शीर्ष पर वापस हैं। इन मूर्तियों से जुड़ी असाधारण सटीक और सुंदरता उस दौर के कारीगरों की विशेषज्ञता का एक बेहतरीन उदाहरण है।

ii. मौर्यकालीन मूर्तिकला की विशेषताओं पर चर्चा करते हुए, निश्चित रूप से मठों की चर्चा करते है। ये इकाइयाँ बौद्ध धार्मिक वास्तुशिल्प का एक अभिन्न अंग हैं। **जेतवन मठ** में श्रावस्ती अशोक द्वारा ईंट और पत्थर जैसी ठोस सामग्री के साथ फिर से बनाया

bpsc books mindplan.in

गया था ताकि यह समय की दरार से बच सके। इस प्रकार **चैत्य हॉल, स्तूप और स्तंभ** अस्तित्व में आए। वाराणसी के पास चुनार में स्थित स्तंभ , मौर्यकालीन मूर्तियों के आवश्यक उदाहरण हैं।

iii. अशोक द्वारा निर्मित स्तंभ पर नक्काशी की गई मूर्तियों के कारण मूर्तियों के उपयुक्त उदाहरण हैं। अशोक स्तंभों के निर्माण में दो प्रकार के पत्थर लगाए गए हैं, जिनमें से कुछ में महीन दाने वाले कठोर बलुआ पत्थर शामिल थे, जो भैंस के रंग के होते थे और अन्य प्रकार जिसमें मथुरा के क्षेत्र से सफेद और लाल बलुआ पत्थर शामिल होते थे। इन पत्थरों पर काले धब्बों के निशान हैं। स्तंभ की राजधानियों में प्रदर्शित समानता यह दर्शाती है कि मूर्तिकला की इन उत्कृष्ट कृतियों को एक ही क्षेत्र के मूर्तिकारों द्वारा तैयार किया गया था।

iv. मौर्यकालीन मूर्तियां एक अद्वितीय, मिट्टी की अपील को उजागर करती हैं। पाटलिपुत्र से तक्षशिला तक फैले क्षेत्र में ऐसी टेराकोटा वस्तुओं का पता लगाया गया है। इस तरह की सुंदर मूर्तियों में एक नितांत ढाला हुआ आकार और एक स्टाइलिश रूप हैं।

v. यक्ष और यक्षिणी की बडी प्रतिमाएं पटना, विदिशा और मथुरा जैसे कई स्थानों पर पाई जाती हैं।

vi. पटना के पास **दीदारगंज** से एक चौरी (फ्लाईविस्क) पकडे यक्षी की आदमकद खडी छवि मौर्य काल की मूर्तिकला परंपरा का एक और अच्छा उदाहरण है।

vii. बाराबर पहाडियों पर नक्काशीदार रॉक-कट गुफा मौर्यकालीन रॉक कट आर्किटेक्चर का एक अच्छा उदाहरण है।

bpsc books mindplan.in

निष्कर्षत:

यह कहा जा सकता है की मौर्य काल भारतीय इतिहास में राजनीतिक एकीकरण के दौर को प्रारम्भिक बिन्दु बन जाता है ' एवं मौर्य कला भारतीय कला परंपरा का प्रस्थान बिंदु है। इस काल में एक ओर जहाँ राजकीय संरक्षण के तहत स्यापत्य कला का व्यापक विस्तार हुआ वहीं दुसरी ओर लोक कला के अंतर्गत मूर्तिकला का भी समुचित विकास हुआ। मौर्य काल की मूर्तियों की चमकदार पॉलीश आज भी अपनी उत्कृष्टता के लिए जानी जाती है। इस काल में विकसित कला परम्परा आज भी कला प्रेमियों के मध्य प्रेरणा एवं कौतुहल का विषय बना हुआ है।

मौर्य शासकों ने वास्तुकला की प्रगति में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया. उत्खनन के आधार पर कहा जाता है कि हडप्पा संस्कृति के लगभग 1500 वर्षों के बाद पहली बार मौर्य काल में वास्तुकला तथा मूर्तिकला को बडे पैमाने पर प्रोत्साहन मिला.

NOTE:

- आप प्रत्येक पॉइंट पर अपने उत्तर को विस्तृत कर सकते हैं| विस्तार क्रमबद्ध और अनुपातिक होना चाहिए| यथासंभव अपने शब्दों में उत्तर दें|
- Mindplan's "Mains notes" aim is to help students write HIGH-SCORING topper standard answers that are:
    - 🏆 To-the-point + strategized + diagrammatic
    - 🏆 Not an iota more than required
    - 🏆 Not an iota less than required
- This is for sample purposes only. More details are available in Mindplan.in BPSC Mains Notes on this topic.

bpsc books **mindplan.in**

BPSC Mains Smart Notes [Hindi / English]

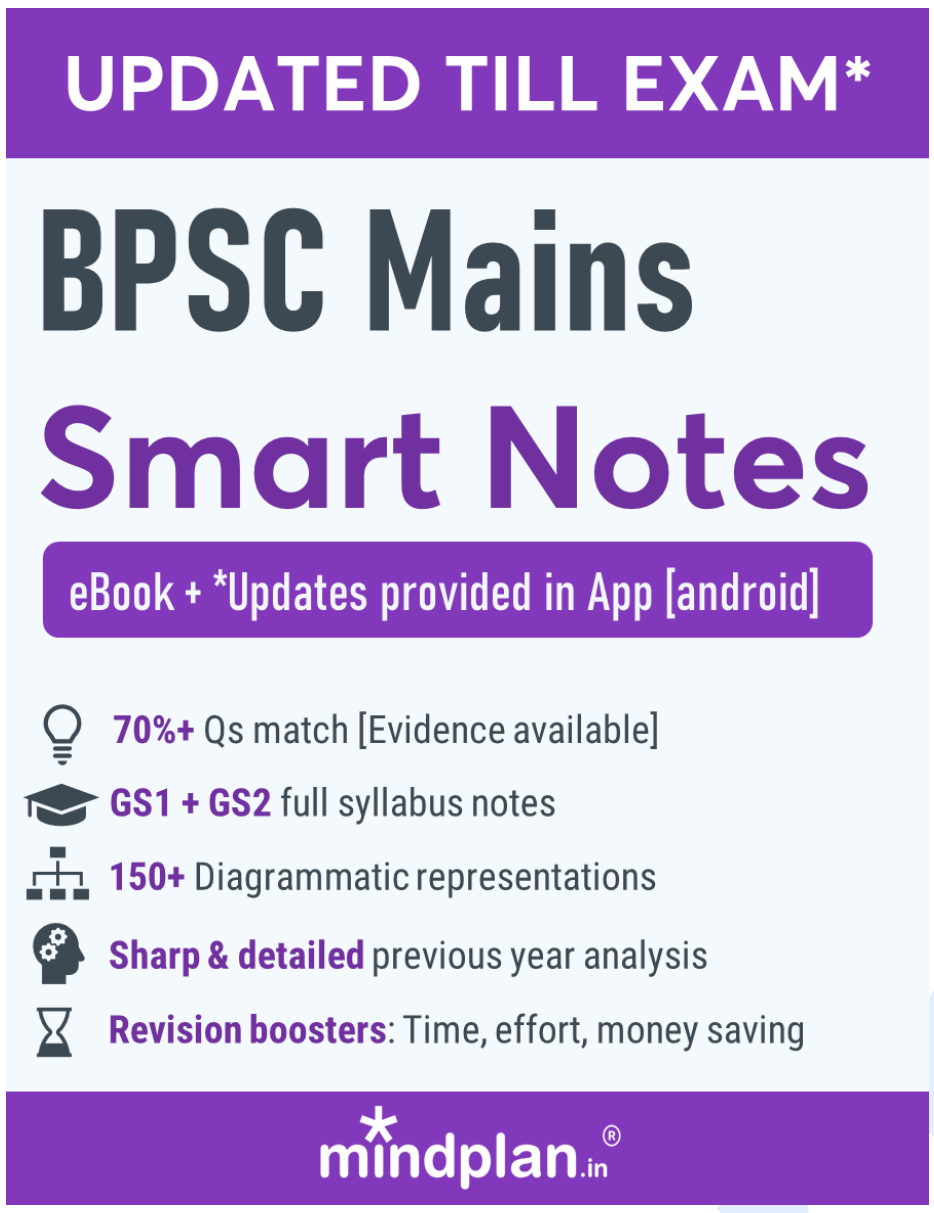

- **Detailed Mains Notes** in a **POWERFUL Question Answer format. Not limited to a certain number of words** to cover all important details from the topic.
- **Any question that comes** from in and around any topic can easily be answered.
- **90%+ Toppers** have emphasized in their interviews to "**prepare BPSC Mains Notes in Question Answer Format.**"
- For most students it may take **upto 1 year** to prepare such Mains Notes.

🏆 **70%+ Questions Match** in past 5 exams.

🏆 Watch Question Match **Evidence Blog & Video** on www.mindplan.in.

🏆 **No marketing.** Direct Evidence.

Click here for details

Honest + Transparent Questions Match Evidence

All topics in notes are as per the Official BPSC Mains Syllabus